बीहन संरक्षक पोषक वृक्ष और इसका महत्व

डॉ एस घोषाल* एवं डॉ बी डी लोहाट**
*प्रधान वैज्ञानिक, **वैज्ञानिक, भाकृअनुप-भा.प्रा.रा.गों.सं.

उत्तम गुणवत्ता वाला पोषक वृक्ष लाख कीट के परिपक्व होने तक पालन, पोषण कर सकता है। कुछ वृक्ष तो ऐसे होते हैं कि कुछ महीने तक ही पालन पोषण कर सकते हैं तथा कुछ ऐसे हैं, जो पालन पोषण तो कर लेते हैं, लेकिन लाख का उत्पादन उतना अच्छा नहीं होता है। लाख की खेती में इसका महत्व भी बहुत ज्यादा है। हम सब जानते हैं कुसुम, बेर, पलाश और सेमियालता पर लाख की खेती होती है, लेकिन पीपल, पोढ़ो, पुत्रि पुटकल, डुमर, गुलर आदि पेड़ में लाख की खेती के बारे में बहुत कुछ नहीं जानते हैं। वर्त्तमान में शोध कार्य इन वृक्षों पर नहीं हो रहे हैं, लेकिन पारंपरिक तरीके से गांव में इसकी खेती होती चली आ रही है। किसान समुदाय में इसके बारे में संचित ज्ञान ही इसे आगे खींच कर ले जा रहा है। ऐसे पेड़ को लाख का बीहन संरक्षक कहा जाता है। आजकल मौसम परिवर्त्तन तथा पोषक तत्व के अभाव के कारण कई बार रंगीनी लाख के फसल की

मृत्यु दर ज्यादा होने लगी है, ऐसे में बीहन संरक्षक वृक्षों का महत्व और बढ़ गया है। उल्लेखित सभी पेड़ चिररहित श्रेणी में आते हैं और गर्मी में छाया प्रदान करती हैं। ऐसी परिस्थिति में ही गर्मी वाले फसल के जीवित रहने की संभावना बढ़ जाती है। ऐसे सारे पेड़ वृहद आकार के होते हैं तथा इनकी जड़ जमीन में बहुत नीचे तक जाती है और लाख कीट को पालने के लिए अतिरिक्त पानी की भरपाई कर लेती है।

प्रगतिशील कृषक तो बेर, कुसुम और पलाश में ही ज्यादातर खेती कर रहे हैं, लेकिन आम कृषकों ने जो कि परंपरा के धारक व वाहक है, इसे छोड़ा नही है। इस पर खेती करते समय किसान लाभ की चिंता नहीं करते, क्योंकि मूल पोषक वृक्षों की तुलना में इस पर लाभ कम है। वो खेती तो करते हैं, उसकी परंपरा को नहीं छोड़ने के उद्देश्य से और दूसरा महत्वपूर्ण कारण है इस पेड़ को व्यवहार में ला करके संसाधन को अच्छी तरह से इस्तेमाल करते है। झारखंड में औसत आकार के कई गांव में 150-200 पीपल, बड़गद, गुलर, डुमर, 5-10 पोढ़ो/पुत्री आदि पेड़ तो मिल ही जाते हैं और सृजनशील किसान इसे दोहन भी करते हैं। कुल संख्या का 10-50 प्रतिशत पेड़ ही इस्तेमाल में आते हैं। एक औसत आकार के पीपल के पेड़ से 20-40 कि.ग्रा. पोढ़ो/पुतरी से 8-15 कि.ग्रा. कुसमी लाख उत्पादन की संभावना है। साधारणतः रंगीनी लाख का उत्पादन क्षमता कम है, इसलिए इसका उत्पावन 50-75% होने का आसार है।

आनुवंशिक गुणावली नहीं तो मृदा की गुणवता के कारण कुछ पेड़ में उत्तम लाख पैदा होता है, जबकि कुछ में तो बिलकुल नहीं होता है। आज के विन में इसका भी गहन अध्ययन होना चाहिए। किसान के पास है कई पीढ़ी से संचित ज्ञान जिसके जरिये उन्हें पता है, कौन से पेड़ में खेती करेंगे और कौन में नही।

झारखंड के हर गाँव में इस तरह के पोषक वृक्ष प्रचूर संख्या में मिलते हैं। चिरा चरित तरीके से ये सब पेड़ को रंगीनी लाख खेती के लिए

इस्तेमाल करते थे। लेकिन रंगीनी लाख की उपज में असंतुलन और संपोषणीयता के अभाव के कारण किसान सब इस पर कुसमी लाख की भी खेती करने लगे हैं। सुन कर आश्चर्य होता है कि एक डेढ़ फिट व्यास वाला अंडी (स्थानीय भाषा) यानि *फाइकस सेमिकॉर्डाटा* के पेड़ से दस कि.ग्रा. छिली लाख और 6'' मोटाई वाला *फाइकस ग्लोमेराटा* के पेड़ से चार कि.ग्रा. बीहनलाख पैदा हुआ है। हमेशा यह देखने को मिलता है कि जिस जगह में पानी का स्रोत संतोषजनक है, वहां पेड़ के लाख उपज के क्षमता भी संतोषजक है और यह भी देखा गया, की लाख खेती का पहला 2-3 साल बहुत ही संतोषजनक उत्पादन होता है।

वैज्ञानिक तरीके से लाख की खेती के प्रशिक्षण के समय ये सब पेड़ पर भी वैज्ञानिक विधि कैसे अपनाया जाए, पर भी चर्चा होनी चाहिए। बीहन संरक्षक वृक्ष पारंपरिक पोषक वृक्ष की तरह उपजाऊ तो नहीं है। लेकिन, सुन कर प्रसन्नता होती है कि इस दौड़ भरी जिंदगी में भी थोड़ा ज्यादा लाभ कमाने के चक्कर में इन प्राकृतिक संसाधनों को भुला नहीं।